॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

विक्रम संवत् २०७५ • वर्ष : ३ • अंक : २ • अक्टूबर २०१९

।।णमो बंभीए लिवीए।।

मुनिश्री वैराग्यरतिविजय गणी

ब्राह्मी सती

जैन परंपरा में ब्राह्मी सती का विशेष स्थान है। **श्री कल्पसूत्र, समवायांगसूत्र, आवश्यक निर्युक्ति, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति** आदि सूत्रों में ब्राह्मी सती का उल्लेख है, जहां बताया गया है कि ब्राह्मी ने भगवान श्री ऋषभदेवजी की पत्नी सुमंगला की कुक्षि से पुत्रीरत्न के रूप में जन्म लिया था। उनके देह की ऊंचाई पांच सौ धनुष्य जितनी थी। पिता ऋषभदेवजी ने उन्हें ही सर्वप्रथम लेखनकला सिखाई थी। इस कारण भगवान ने जिस लिपि में यह कला सिखाई थी वही लिपि **ब्राह्मी** नाम से जानी गई। ब्राह्मी सती भगवान श्री ऋषभदेवजी से दीक्षा लेनेवाली सर्वप्रथम महिला थी। उस काल में तीन लाख श्रमणियों के समूह की वे नायिका थी। भगवान श्री ऋषभदेवजी ने ब्राह्मी और सुंदरी को उनके भाई बाहुबली को सन्मार्ग समझाने के लिए भेजा था। ब्राह्मी सती ने चौरासी लाख पूर्व वर्षों का आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष प्राप्त किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से ब्राह्मी सती को तीन संदर्भों में विशेष याद किया जाता है।

१) ब्राह्मी लिपि की जन्मदाता
२) इस अवसर्पिणी काल की प्रथम साध्वीजी
३) बाहुबली को प्रतिबोधित करने में उनकी भूमिका

ब्राह्मी सती का पूर्व भव

पिता श्री ऋषभदेवजी के साथ उनका संबंध पूर्वभव से था। जीवानंद वैद्य (भगवान का एक पूर्वभव) के भव में ब्राह्मी की आत्मा गुणाकर नामक श्रेष्ठिपुत्र था। एक ग्लान महात्मा की सेवा द्वारा उसने प्रकृष्ट पुण्य उपार्जित किया था।

तत्पश्चात् के मनुष्य भव में उनका पीठ नाम था। इस भव में साधु-महात्माओं की जबरदस्त वैयावच्च करनेवाले बाहु-सुबाहु नामक मुनि की प्रशंसा सुनकर उन्हें ईर्ष्या जागी। परिणाम स्वरूप अंतिम भव में उन्हें स्त्री रूप में जन्म मिला। भगवान श्री ऋषभदेवजी को दो पत्नियां थी- सुनंदा और सुमंगला। ब्राह्मी सुमंगला की पुत्री थी। भरत महाराजा और ब्राह्मीजी जुडवा भाई-बहन थे।

दिगम्बर परम्परानुसार पूर्वभव में ब्राह्मी एवं भगवान श्री ऋषभदेवजी के साथ विशेष संबंध का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। यहां उनका उल्लेख इस प्रकार है कि 'भगवान की पत्नी यशस्वती ने सौ पुत्रों के पश्चात् पुत्री को जन्म दिया। भगवान श्री ऋषभदेव ब्रह्मा कहलाएं इस कारण उनकी प्रथम पुत्री ब्राह्मी नाम से प्रसिद्ध हुई।'

आदि पुराण के सोलहवें पर्व (श्लोक ७२ से ११७) में कलाप्रवर्तन के संदर्भ में वर्णन है कि एक दिन ऋषभदेवजी ने ब्राह्मी और सुंदरी को अपनी गोद में बैठाकर उनके माथे पर स्नेहपूर्ण हाथ फिराकर उन्हें विद्या का महत्त्व समझाया। उसके बाद एक स्वर्ण-पाट पर श्रुतदेवी की स्थापना के साथ अपने दाहिने हाथ से **वर्णमाला** एवं बाएं हाथ से उन्हें **अंकशास्त्र** (गणित) सिखाया। सर्वप्रथम **।।सिद्धं नमः।।** यह मंगल सिखाया। तत्पश्चात् व्याकरण, छंद, अलंकार आदि विद्याओं का ज्ञान करवाया। आदि पुराण में दोनों बहनों को सरस्वती जैसा दर्शाया गया है।

ब्राह्मी लिपि स्तुति

शास्त्रों में ब्राह्मीसती को सरस्वती के अवतार के रूप में याद किया गया है।

श्री भगवती सूत्र में भी ब्राह्मी लिपि को नमस्कार करने में आया है।

किसी अज्ञात महापुरुष द्वारा **महासती कुलक** में ब्राह्मीसती को मरुदेवी के पश्चात् प्रथम शीलवती-पापरहित महासती के रूप में याद किया गया।

तेरहवीं-चौदहवी सदी में पूज्य आचार्य श्री धनेश्वरसूरिजी महाराज ने **शत्रुंजय माहात्म्य** की रचना की। उसमें ब्राह्मी सती को याद करते हुए उल्लेख किया है कि, जब भरत महाराजा एवं बाहुबलीजी के बीच चला युद्ध खत्म हो गया और पुंडरीक स्वामीजी निर्वाण प्राप्त हुए उसके पश्चात् भगवान श्री ऋषभदेवजी विनीता (वर्तमान में अयोध्या) नगरी पधारे। तब प्रभु ने संघयात्रा के महत्त्व का वर्णन किया। उनके उपदेश से भरत महाराजा को प्रेरणा मिली और वे संघयात्रा लेकर शत्रुंजय आए। यहां उन्होंने बडे भाव से परमात्मा की प्रतिष्ठा की। भगवान की स्तुति और मरुदेवी माता के चैत्य में जाकर उनकी स्तुति की। आखिर में ब्राह्मीसती के चैत्य में उनकी स्तुति में निम्नलिखित भाव स्फुरित हुए-

ब्राह्मी सती समग्र विश्व की स्थिति को जानती है। योगी उनका ध्यान करते हैं। ब्राह्मी सती का स्वभाव स्थिर है। दूसरों का भय हरण करने में सिद्ध हैं। नमन करनेवालों को तारनेवाला उनका दिव्यसतीत्व रूप है। ऐसी दिव्यशक्ति की देवता और मनुष्य पूजा करते हैं। ब्राह्मी सती मंत्र स्वरूपा है। श्री युगादीश्वर की पुत्री ब्राह्मी सती विश्वमाता है। ब्राह्मी सती जगत् के समस्त जीवों के प्राण समान है। उनके कारण ही इस जगत् में सर्व पदार्थ जागृत हैं। योगीगण उनको

अपने हृदयकमल में बसाकर निरंतर स्मरण करते हैं। उज्ज्वल शीलधारी ब्राह्मी सती शब्दब्रह्म को जन्म देनेवाली माता है।

चौदहवीं शताब्दी में पू. आ. श्री जिनप्रभसूरिजी म. ने श्रेणिक राजा के जीवन के वर्णन में काव्य की रचना की। उस रचना के मंगल श्लोक में भी ब्राह्मी सती का स्मरण करते हुए बताया है कि, विश्व के परोपकार के लिए ऋषभदेव भगवान ने अक्षरमाला सबसे पहले ब्राह्मी को ही अवगत करायी।

पंद्रहवीं शताब्दी में पू. आ. श्री मुनिसुंदर म. ने **सुमुखनृप कथा** के मंगल श्लोक में ब्राह्मी सती को कल्पलता समान बताया है। ऐसी कल्पलता, जिसके काव्यपुष्पों को लेकर विद्वान ग्रंथमाला गुंथते (रचना करते) हैं।

सोलहवीं सदी में पू. आ. श्री दानसूरिजी म. के किसी अज्ञात शिष्य ने एक **साधारण जिन स्तवन** की रचना में ब्राह्मीसती को श्रुतदेवी के रूप में नवाजा है। उन्हें गुणों की खाण और विद्वानों की बुद्धि-प्रदाता कहा है।

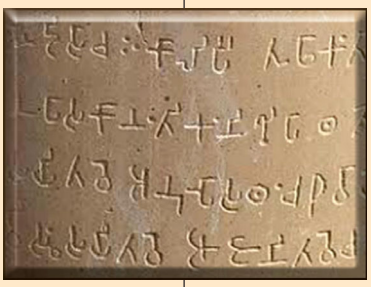

सत्रहवीं सदी में श्री गुणविजयजी उपा. ने पू. आ. श्री सेनसूरिजी म. के जीवनवर्णित काव्य पर टीका के मंगल श्लोक में ब्राह्मी सती को ब्रह्मचारिणी के रूप में उल्लेखित किया है। इसी सदी में समयसुंदर उपाध्यायजी ने एक ही वाक्य में आठ लाख अर्थ वर्णित ग्रंथ की रचना के मंगलश्लोक में ब्राह्मी सती को इच्छित फल का वरदान देनेवाली बताया है।

अठारहवीं सदी में पू. आ. श्री लक्ष्मीसूरिजी म. रचित ज्ञानपंचमी के देववंदन में इस प्रकार स्मरण किया है-

श्री श्रुतदेवी भगवती जे ब्राह्मी लिपि रूप,
प्रणमे जेने गोयमा हुं वंदुं सुखरूप। (ज्ञानपंचमी देववंदन-१)

उन्नीसवीं सदी में पू. आ. श्री ज्ञानविमलसूरिजी ने पूजाविधि स्तवन में ब्राह्मी सती के गुण इन शब्दों में गाएं है-

श्री जिनवदन निवासिनी समरी सारद माय,
पंचम अंगि धुरि भली ब्राह्मी लिपि कहेवाय।।

- (**पूजाविधि स्तवन**, ज्ञानविमलसूरि जैनानंद ह. प्र. ११९३)

दीवाली में शारदा पूजन की परंपरा वाले पूजन में ब्राह्मी सती को इस तरह याद करते है-

भगवती सूत्रे धूर नमी बंभी लिपि जयकार।
लोक लोकोत्तर सुख भणी भाखी लिपि अढार।।

इसके अतिरिक्त ब्राह्मी सती की आरती की रचना भी है-

जयजय आरती ब्राह्मी तुमारी, तुज सेवा संसार निवारी
जनहित माटे इह जगतमां, लिपि अष्टादश तेजप्रसारी
बाहुबलीनो उपन्युं केवल, ताहरी कृपाथी ऋषभकुमारी
पंचम कालमां कल्पतरु तु, दासतणा वांछित पुरणारी

ब्राह्मी लिपि

वैदिक मतानुसार ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है। आधुनिक संशोधनकारों की दृष्टि में इस लिपि की उत्पत्ति का कोई मूल उद्गम प्राप्य नहीं है। अंग्रेजों ने इस संदर्भ में अनेक प्रस्थापनाएं प्रस्तुत करते हुए इसे भारत से बाहरी बताने के भरसक प्रयास किए मगर उनके तथ्य निर्मूल साबित हुए।

ऐतिहासिक अध्ययन के आधार से वर्तमान भारतीय लिपियों के विकास चरणों को तीन कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है-

१) **प्राचीन काल** (ई. स. पूर्व ५०० से ई. स. पूर्व ३०० वर्ष तक)
२) **मध्यकाल** (ई. स. पूर्व ३०० से ई. स. १००० तक)
३) **आधुनिक काल** (ई. स. १००० से आज तक)

ब्राह्मी लिपि के संदर्भ में ई. स. पूर्व ५०० से ई. स. ७५० तक प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं। वर्तमान में उपलब्ध सबसे प्राचीन २५०० वर्ष पूर्व का एक लेख पीपरवा गांव, जनपद बस्ती (वर्तमान में पाकिस्तान स्थित) के एक स्तूप में मिलता है। इससे पूर्व के कोई लेख प्राप्त नहीं है। २३०० वर्ष पूर्व अर्थात् ई. स. पूर्व ३०० में सम्राट अशोक के काफी लेख ब्राह्मी लिपि में मिलते हैं। अशोककालीन लिपि की भाषा प्राकृत है। उस समय वायव्य प्रांत के अलावा समग्र भारत में ब्राह्मी लिपि व्यापक रूप में प्रचलित थी। इसके प्राचीन अभिलेख (अशोक कालीन लेखों से पूर्व) नेपाल की तराई एवं अजमेर के समीप वडली गांव में भी मिलते हैं।

पण्णवणा सुत्त नामक आगमसूत्र में तथा **ललित विस्तर** नामक बौद्ध ग्रंथ में चौसठ लिपियों के उल्लेख में भी ब्राह्मी लिपि का वर्णन मिलता है। इन सब प्रमाणों के अतिरिक्त अनेक प्राचीन शिलालेखों में **ब्राह्मी** एवं **खरोष्ठी** लिपि ही दिखाई देती है। वर्तमान में उपलब्ध ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला अशोककालीन है। शिलालेखों में इसे धर्मलिपि कहा गया है।

वर्तमान भारत की तमाम लिपियों का उद्भव ब्राह्मी लिपि से ही हुआ है मगर दुर्भाग्य है कि हमारे देश के पूर्व विद्वानों ने सदियों पूर्व की इस विरासत को लगभग विस्तृत बना दिया। चौदहवीं सदी में फिरोजशहा तुगलक (ई.स. १३५१-१३८८) तथा अकबर के समय (ई.स.१५५६-१६५०) में ब्राह्मी लिपि पढ सके ऐसा एक भी विद्वान उपलब्ध नहीं था। तुगलक ने पंजाब के अंबाला जिले के टोपटा और मीरत नामक गांवों से अशोककालीन लेख दिल्ली मंगवाएं और दरबार के विद्वानों को पढने के लिए कहा मगर कोई भी वह लिपि पढ नहीं पाया। यह बात शम्स-ईदसिराज (तारिख-ए-फिराजशाही) में दर्ज है। अकबर ने भी इस विषय में पहल की थी मगर निष्फल रहा। मात्र जैन परम्परा में कुछ गिने चुने विद्वानों को ही इसका ज्ञान रहा होगा।

ब्राह्मी लिपि की शोधयात्रा

ब्राह्मी लिपि पढने का अंग्रेजों ने भी काफी प्रयास किया। ई.स. १७५५ में सर चार्ल्स मॅलेट ने एलोरा की गुफाओं से ढूंढे गये लेखों में ब्राह्मी लिपि की छाप तैयार कर सर विलियम जोन्स को भेजी। जोन्स ने विल्फोर्ड नामक विद्वान को भेजी मगर उनके भी बस के बाहर की बात रही।

टोम कोरियट नामक एक विदेशी प्रवासी ने दिल्ली के समीप एक स्तंभ पर अशोक का लेख देखा। कोरीयट ने एक पत्र द्वारा एल. विक्टर नामक विद्वान को यह संदेश भेजा कि, 'इस देश में मैंने एक शिलालेख देखा है। यहां महान सिकंदर ने भारत के राजा पोरस पर अपनी महाविजय की स्मृति में एक बडा विजयस्तंभ तैयार करवाया जो आज भी सुरक्षित है।' फिर तो यूरोप से आने वाले तमाम प्रवासी यही मानने लगे कि यह लेख ग्रीक भाषा में लिखा गया है।

ई.स. १८३४-३५ में इन शिलालेखों का सारांश जानने की तीव्र ईच्छा से जेम्स प्रिन्सेप ने इलाहाबाद, रठिया तथा मठिया स्थित स्तंभों पर लिखे लेखों की छाप और एक दूसरे लेखों के अक्षरों के साम्य देखने के लिए कोरियर ने देखे हुए दिल्ली के स्तंभ की छाप से मिलान किया। तुलनात्मक अध्ययन से उसकी नजर मे यह बात साफ आयी कि अन्य लेखों में एक ही शब्दों का उपयोग हुआ

है। बडी उम्मीद के साथ उसने इलाहाबाद से प्राप्त लेख के अक्षरों को अलग-अलग किया, तब उसने बडी सरलता से समझ लिया कि गुप्त लिपि की तरह इसमें भी अनेक अक्षरों के साथ जुडी स्वर सूचक मात्राओं के चिह्न भी हैं। जेम्स ने अपनी अध्ययन की गई सामग्रियों को जमाकर प्रकाशित किया (JASB३, ७, प्लेट ५) कि यह लिपि पूर्णतः भारतीय है। इस तथ्य से यह कल्पना निर्मूल हो गई कि यह लेख ग्रीक भाषा के हैं। कालांतर में **जेम्स प्रिंसेप** ने ही (ई.स. १७९९-१८४०) कडी मेहनत से ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला तैयार की। जेम्स उस समय **एशियाटिक सोसायटी** कलकत्ता के सेक्रेटरी थे। जेम्स की शोध के बाद भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन का एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ।

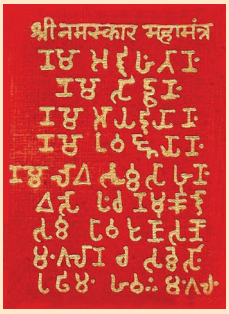

जेम्स ने १८३६ में सांची के स्तूप पर कुरेदे गये लेखों की छाप जमाकर अपना संशोधन चालू रखा। दिल्ली, इलाहाबाद, सांची, मठिया, रठिया, गिरनार, धौली आदि स्थानों से प्राप्त लेखों को पढकर उसने निश्चित किया कि इन तमाम लेखों की भाषा संस्कृत तो नहीं है, बल्कि भिन्न स्थानों में प्रचलित वहां की प्राकृत भाषा है।

पाश्चात्य देशों के विद्वानों की तरह भारतीय विद्वानों ने भी अपार मेहनत की। ब्राह्मी लिपि के इन लेखों के उद्गम की शोध में लगे विद्वानों में इस विषय के आदि पुरुष **भगवानलाल ईन्द्र** प्रमुख थे। सन १८३९ में उनका जन्म गुजरात के जुनागढ में हुआ था। मात्र १८ वर्ष की आयु में गिरनार की छत्रछाया में स्वयं सिद्ध लिपिविद् बने। उन्होनें कलिंग के खारवेल, उदयगिरि की गुफाओं, बिहार की बरावती की गुफाओं में लिखी गई लिपियों को ढूंढकर उनका वर्णन लिखा। उन्होंने किसी युनिवर्सिटीज के दरवाजे खटखटाये बिना पुरातत्त्व क्षेत्र में अपना विशेष स्थान हांसिल किया। इन लंबे प्रयासों की सार्थकता के लिए उन्हें भारतीय पुरातत्त्व का आद्यपुरुष माना गया है।

पांडुवंश के राजा तीवरदेव की पेटिका-शीर्षक (वाकाटक राजवंश की लिपि) में लिखे लेख को पढने का श्रेय **श्री वर्म (धर्म) सूरिजी** नामक जैन साधु को है। ई.स. १८१८ से १८२३ तक कर्नल टोड ने राजस्थान, गुजरात और मध्यभारत के सातवीं से पन्द्रहवीं सदी तक के जो लेख ढूंढ निकाले थे, उन लेखों को पढने का श्रेय यति ज्ञानचंद्र को है।

ब्राह्मी लिपि में पूर्ण विकसित वर्णमाला है। यह एक वैज्ञानिक लिपि है। यह लिपि सामी आदि लिपियों की तुलना से काफी श्रेष्ठ लिपि है, कारण यह जिस तरह बोली जाती है, उसी भांति ही लिखी जाती है। ब्राह्मी लिपि में समस्त भारतीय भाषाओं के प्रत्येक अक्षर लिखे जा सकते हैं। इस लिपि के स्वर और व्यंजनों की संख्या निश्चित है। स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ आदि भेद दर्शित चिह्न भी होते हैं। उच्चारण के लिए तमाम उपयोगी चिह्न हैं। अपनी परिपुष्ठता के साथ उस काल के सभ्य समाज की अन्य प्रचलित लिपियों में ब्राह्मी सर्वोच्च थी। प्राकृत और संस्कृत भाषा के लिए ब्राह्मी लिपि का प्रचुर उपयोग होता था।

काल के प्रवाह के साथ ब्राह्मी लिपि में परिवर्तन भी हुए और भारत की अन्य प्रादेशिक लिपियों को ब्राह्मी लिपि ने जन्म भी प्रदान किया है। नागरी, गुरुमुखी, बंगाली, असमी, उडिया एवं ग्रंथ आदि लिपियों का उद्भव में ब्राह्मी लिपि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इतना ही नहीं, **भारत की पडौसी भूमि तिब्बत, थाईलैंड, म्यांमार (ब्रह्मदेश), कंबोडिया, श्रीलंका, लाओस, नेपाल आदि देशों की लिपियों का मूल भी ब्राह्मी लिपि है।**

कालांतर में ब्राह्मी लिपि मुख्यतः दो धाराओं में विभाजित हो गई। १) उत्तरी धारा, २) दक्षिणी धारा।

ब्राह्मी लिपि मूलतः स्वभाव से काफी सरल है, मात्र एक दो दिन में आसानी से सीखी जा सकती है। प्राचीन समय में इस लिपि का लेखन ताडपत्र अथवा कागज पर नहीं हुआ, केवल शिलालेखों पर ही कुदेरी गई।

वर्तमान समय में भी इस लिपि के प्रति रुचि जागृत हो रही है। **महावीर जैन आराधना केंद्र - कोबा एवं ला. द. संस्कृति विद्या मंदिर - अहमदाबाद** में ब्राह्मी लिपि सीखाई जाती है। **श्रुतभवन संशोधन केंद्र,** पुणे में भी अभ्यासक्रम संचालित होते हैं। **पं. उत्तमकुमार सिंह** भी भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर जिज्ञासु विद्यार्थियों को सिखाते हैं। दिगम्बर परम्परा ब्राह्मी लिपि सीखने-सीखाने में काफी सक्रीय है। सोलापुर में **महावीरजी शास्त्री** भी इस लिपि के लिए सदा सक्रिय रहते हैं, उन्होंने गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी वर्णमाला की तरह **ब्राह्मी लिपि की सचित्र पुस्तिका** प्रकाशित की है।

प्राचीन शास्त्रों के समीक्षात्मक संपादन कि लिए उत्सुक विद्वानों के लिए, ब्राह्मी लिपि के वैज्ञानिक अभ्यास की अनिवार्यता है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण है कि, भारत की तमाम लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि है इसलिए इन तमाम लिपियों की वर्तमान आकृतियों के मूल ब्राह्मी लिपि में हैं। प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों में सहज न पढे जानेवाले अक्षरों के गांभीर्य को तलाशने में ब्राह्मी लिपि का ज्ञान सहयोगी बनता है। उदाहरणार्थ, पाटण में **पुष्पावती चरित्र** की दसवीं सदी में लिखित ताडपत्र प्रत है, उसमें इ वर्ण इस तरह लिखा है, ब्राह्मी लिपि में यह ई इस ०,० तरह लिखी जाती है-०,०। ऐसी जानकारियों से प्राचीन लिपि का गांभीर्य सहज पता चल सकता है और संपादन कार्य भी प्रामाणिक बन सकता है।

- (मुल गुजराती लेख का हिंदी स्वरूप- ओमजी ओसवाल)

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

- **पू.सा. श्री जिनरत्नाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री अंकलेश्वर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, अंकलेश्वर**
- **स्व. वरजुबाई चुनिलालजी मुथा परिवार, पुणे**
- **श्री श्वेताबंर मूर्तिपूजक जैन संघ, जुना नागरदास रोड, अंधेरी**
- **श्री हसमुखभाई मनसुखलाल शाह, मुंबई**
- **श्री जैन श्वेतांबर महाजन ट्रस्ट, करचेलिया, सुरत**
- **ऋत्वा वैभवकुमार दलाल, अहमदाबाद**
- **श्री आदेश्वर महाराज टेंपल ट्रस्ट, गोटीवाला धडा, पुणे**
- **श्री विमलनाथ स्वामी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक ट्रस्ट, बिबवेवाडी, पुणे**
- **पू. आ. श्री चंद्रगुप्तसू. म.सा. की प्रेरणा से एक सद्गृहस्थ**
- **पू. आ.श्री तीर्थभद्रसू. म.सा. की प्रेरणा से श्री आदिनाथ जैन संघ, चेन्नई**
- **श्री मनसुखलाल फुलचंद शाह परिवार, वलसाड**
- **पू. आ. श्री चंद्रगुप्तसू. म.सा. की प्रेरणा से एक सद्गृहस्थ**

पदार्पण

- **श्रुतभवन** में पू. आ. श्री **विश्वरत्नसागरसू.** म.सा., पू. आ. श्री विजय **मोक्षरतिसू.** म.सा. तथा पू. पं.श्री **तत्त्वदर्शनवि.** ग., पू. उपा. श्री **वैराग्यरत्नसागरजी** म.सा., पू. मु. **चंद्रयशवि.** म.सा., लिंबडी संप्रदाय के सा. श्री **सम्यग्दर्शनाजी** म.सा., लाईफ केअर तथा नॅनो लाईफ, चेन्नई के चेअरमन श्री **अभयकुमारजी श्रीश्रीमाळ,** उज्जैन के डॉ. **सुभाष जैन,** अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना के संस्थापक ब्र. **संदीपजी सरल** का पदार्पण हुआ।

समाचार

- दि. २३/२४-०६-२०१९ के दिन **श्रुतभवन संशोधन केंद्र** स्थित नवनिर्मित जिनालय में **श्री श्रुत पार्श्वनाथ भगवान** आदि **ग्यारह रत्नमय प्रतिमाओं** का **पावन प्रवेश** उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।
- पू. **गुरुदेव** की मुलाकात युवाचार्य श्री **महेंद्रऋषिजी** म.सा. एवं पू. सा. श्री **प्रीतिसुधाश्रीजी** म. सा. से हुई। संस्था के विश्वस्त एवं श्रुतसेवकों के द्वारा वापी में पू. आ. श्री **पुण्यानंदसू.** म.सा., पू. आ. श्री **रत्नभूषणसू.** म.सा., पू. आ. श्री **आगमचंद्रसागरसू** म.सा. एवं पुना के विविध संघ में **श्रुतभवन** की गतिविधियाँ एवं **अक्षरश्रुतम्** प्रकल्प की जानकारी दी गई।
- श्री वासुपूज्यस्वामी जैन टेंपल ट्रस्ट, केंप, पुणे। **निश्रा:- पू. आ.श्री चंद्रगुप्तसूरिजी म.सा.**
- श्री आदिनाथ जैन देरासर, कर्वे रोड, पुणे। **निश्रा:- पू. आ. श्री देवचंद्रसागरसू.म.सा.**
- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, गुलटेकडी, पुणे। **निश्रा:- पू. उपा. श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा.**
- श्री पंचदशा ओसवाल सिरोहिया साथ गोटीवाला धडा, गुरुवार पेठ, पुणे। **निश्रा:- पू. पं. श्री विरागसागरजी म.सा.**
- श्री वर्धमानस्वामी जैन चॅरिटेबल ट्रस्ट, सदाशिव पेठ, पुणे। **निश्रा:- पू.पं. श्री भावेशरत्नविजयजी ग.**
- श्री राजेंद्रगुरु त्रिस्तुतिक जैन संघ, गुरुवार पेठ, पुणे। **निश्रा:- पू. श्री लाभेश/ललितेशविजयजी म.सा.**
- श्री मुनिसुपार्श्वशांति जैन संघ, ईशा पॅलेस, सॅलेसबरी पार्क, पुणे।

प्रतिभाव

श्रुतभवन देखकर आनंद गौरव एवं धन्यता का अनुभव हुआ। यहां मुख्यतः दो प्रवृत्तियां चल रही है। एक, **प्राचीन प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों का पुनः संपादन करना और दूसरा प्राचीन हस्तलिखित प्रतों का दस्तावेजीकरण करना।** पहला कार्य अनेक साधु-साध्वी भगवंत भी कर रहे हैं। दूसरे कार्य में श्रुतभवन की खास महारत है। उपरोक्त दोनों कार्यों के लिए **गणिवर्यश्री वैराग्यरतिविजयजी** के पास दृष्टि है, सामर्थ्य है, कला है और सबसे अधिक उनकी व्यक्तिगत लगन भी है। दोनों कार्यों को परिपूर्ण, प्रामाणिक और सटीक स्वरूप में पूरा करने के लिए आप पूरी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। उपरोक्त कार्यों से श्रीसंघ को जो लाभ हो रहा है वह अवर्णनीय है। गणिवर्यश्री का मनोरथ और पुरुषार्थ सफल बनें ऐसी प्रभु चरणों में भावपूर्ण प्रार्थना।

-आ. विजय मोक्षरतिसूरि

समाचार

प.पू. मुनिप्रवरश्री **वैराग्यरतिविजयजी** गणिवर की एँजिओप्लास्टी पूना हॉस्पीटल में डॉ. रविंद्र जैन एवं डॉ. प्रसाद शाह के द्वारा सुखरूप संपन्न हुई। पू. मु. श्री **प्रशमरतिविजयजी** म.सा. की निश्रा में कामठी में रामायण की प्रवचनमाला प्रवर्तमान है। पू. सा.श्री. **जिनरत्नाश्रीजी** म. की निश्रा में भूषण तीर्थ की चैत्यपरिपाटी निकली।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प के अंतर्गत **लोकप्रकाश, श्रेयांसजिनचरित, अनेकार्थध्वनिमंजरी, वासवदत्ता आख्यायिका वृत्ति, जिनशतक टीका, तर्कभाषाचन्द्रिका, वनस्पतिसप्ततिका, उपदेशशत सह टीका, षड्द्रव्यनयादिविचार** का संपादन कार्य प्रवर्तमान है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प के अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म.सा., पु. आ. श्री **मुक्तिवल्लभसू.** म.सा., पु. मु. श्री **कृतदर्शीवि.**म.सा., पू. मु. श्री **राजसुंदरवि.** म.सा., **कोबातीर्थ** तथा **प्रतिक रुमडे** (जर्मनी) को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre

(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)

47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046

Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel